RNI : 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 52
सृष्टि संवत् 1960853116
27 मार्च 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726
जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 52, 24/27 मार्च 2016 तदनुसार 16 फाल्गुन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

जगदुत्पादक सब कुछ दे

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

सविता पश्चातात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः॥
-ऋ० १०।३६।१४

शब्दार्थ-सविता= जगदुत्पादक परमेश्वर **पश्चात्तात्** = पीछे से है। **सविता** = जगदुत्पादक परमेश्वर **पुरस्तात्** = सामने से है। **सविता** = जगदुत्पादक परमेश्वर **उत्तरात्तात्** = ऊपर है। **सविता** = जगदुत्पादक परमेश्वर **अधरात्तात्** = नीचे है। **सविता** = जगदुत्पादक, जगत् का शासक, शुभप्रेरक कृपालु परमेश्वर **नः** = हमें **सर्वतातिम्** = सब पदार्थ, सभी प्रकार का विस्तार **सुवतु** = देवे। **सविता** = महादाता जगद्विधाता **नः** = हमें **दीर्घम्** = दीर्घ **आयुः** = आयु, जीवन **रासताम्** = देवे।

व्याख्या-जिस सूक्त का यह मन्त्र है, उसमें चौदह मन्त्र हैं, प्रथम और अन्त के दो मन्त्रों को छोड़कर शेष ग्यारह मन्त्रों की टेक है-"**तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे**' = हम आज देवों का वह प्रसिद्ध अवस् = रक्षण, प्रेम, साहाय्य चुनते हैं। कहीं लोगों को भ्रम न हो जाए, इसलिए इस चौदहवें मन्त्र में स्पष्ट कह दिया-'**सविता नः सुवतु सर्वतातिम्**' = सर्व प्रकार का विस्तार जगत्कार ही हमें दे, अर्थात् हम किसी से नहीं माँगते, हम उसी से सब-कुछ माँगते हैं, जो उसका उत्पादक है। उसकी 'सर्वताति' = सब= कुछ देने की शक्ति के प्रदर्शन के लिए, उसकी सर्वत्र विद्यमानता का बखान करने के लिए वेद कहता है-

'**सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।** = भगवान् आगे-पीछे, ऊपर-नीचे सभी जगह है, अतः हम कहीं हों, वह हमें अवश्य देगा। संक्षेप से इस सूक्त में वर्णित कामनाओं का निर्देश करते हैं-

१. पहले मन्त्र में सभी प्राकृत शक्तियों का आह्वान है।

२. **मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत**-हम पर दुष्टज्ञानमयी पापवासना शासन न करे।

३. **स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि**-हम आनन्दमय, सरल प्रकाश को प्राप्त करें।

४. **आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि**-हम याज्ञिकों के अखण्ड कल्याण को प्राप्त करें।

५. **सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि**-हम जीने के उत्तम सङ्केतयुक्त मननसाधन का चिन्तन करें, धारण करें।

६. **दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं कृणुतं सुम्नमिष्टये। प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन**-अश्वि = प्राण-अपान हमारे यज्ञ को दिविस्पृक्= आकाश तक पहुँचनेवाला [परमात्मा से मिलानेवाला], जीवों का घात न करनेवाला, अभीष्ट सिद्धि के लिए सुखकारी, उन्नत प्रकाशवान् तथा प्रकाश से आहुत करें।

७. **रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि**-हम धनवृद्धि को उत्तम कीर्ति के लिए धारण करें।

८. **सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि**-उत्तम रश्मियुक्त [श्रेष्ठ मन से युक्त शान्तिदायक इन्द्रियों] को हम संयत करें।

९. **ब्रह्मद्विषो विष्वगेनो भरेरत**-ब्रह्मद्वेषी, ज्ञान के वैरी, धर्म के विरोधी, परमात्मा के वैर-अपराध को पूरी तरह भरें।

१०. **जैत्रं क्रतुं रयिमद्वीरवद्यशः** विजयी कर्म, धन-जनयुक्त यश प्राप्त करें।

११. **वसु वीरजातं नशामहै**-हम वीरोत्पादक धन प्राप्त करें।

१२. **श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि**-भगवान् की श्रेष्ठ प्रेरणा में रहें।

इन कामनाओं पर ध्यान दीजिए। इनमें एक विशेष योजना है। पाप से रहित होने की कामना से आरम्भ करके 'भगवान् की श्रेष्ठ प्रेरणा में रहने' की भव्य भावना पर अवसान है और इसी कारण अन्त में सब कामनाओं की पूर्त्ति की आशा की है।

प्रश्न होता है कि 'देवों की अवः' की कामना क्यों ? इसका समाधान यह है कि वे भगवान् के मार्ग पर चलकर अभीष्ट सिद्ध कर चुके हैं। जिस मार्ग से प्रभु के प्यारे चलते हैं, उसी मार्ग पर चलना चाहिए। मनुजी भी कहते हैं-'**तेन यायात्सतां मार्गं तेन गच्छन्न रिष्यते**'[मनु० ४।१७८] = मनुष्य सत्पुरुषों के मार्ग पर चले, उस पर चलने से वह हानि नहीं उठाता।

भगवान् को प्राप्त करने से पूर्व भगवत्प्रेमियों की प्रीति प्राप्त करनी ही पड़ती है, अतः कहा-'**तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे**' = देवों की उस रक्षा-प्रीति को हम आज ही चाहते हैं, चुनते हैं।

आमंत्रण सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में 8 अप्रैल 2016 दिन शुक्रवार को आर्य समाज स्थापना दिवस राज्य स्तर पर बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम

हवन यज्ञ प्रात : 9.00 बजे — नाशता 10.00 बजे
मुख्य कार्यक्रम 11 बजे से 2 बजे तक — ऋषि लंगर 2.00 बजे
इस कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

सुदर्शन शर्मा — सभा प्रधान
प्रेम भारद्वाज — सभा महामंत्री

"आर्य समाज संगठन जन्मना जातिवाद का विरोधी है"

-पं० उम्मेदसिंह विशारद, वैदिक प्रचारक, देहरादून

सृष्टि प्रारम्भ से महाभारत युद्धकाल तक मानव समाज में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था थी, और समाज में जाति पाति, छूआछूत, ऊँच-नीच का प्रचलन नहीं था महाभारत युद्ध के उपरान्त वैदिक व्यवस्था व संस्कार न्यून होने के कारण वर्ण व्यवस्था का स्थान जन्मना जाति व्यवस्था ने ले लिया। और परस्पर एक जाति दूसरी जाति से घृणा द्वेष करके भयंकर नर संहार होने लगे, और समाज में वैदिक संस्कारों का प्रचलन, वैदिक धर्म मान्यता, तथा सत्य ईश्वर की जगह मनुष्य की शक्ल वाली बुतों की पूजा ने स्थान ले लिया। परिणामस्वरूप समाज में अनेक विषमताओं ने जन्म ले लिया।

ईश्वर की कृपा से 19वीं शताब्दी में देव पुरुष महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई और आर्य समाज ने तमाम धार्मिक सामाजिक, व राजनैतिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु कमर कसी। और तमाम चुनौतियों को स्वीकार करके समाज को एक नयी दिशा प्रदान की और कर रहा है।

वर्णों की परिभाषा

''ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृत :

उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत (यजुर्वेद)''

अर्थात् (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ-सम्मुलास से) जो पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सबमें मुख्य उत्तम हो, वह ब्राह्मण और (बाहु-वैवीर्यम) बल वीर्य का नाम बाहू है वह जिसमें अधिक हो सो (राजन्यः) क्षत्रिय (उरू) कटि के अधोभाग और जानू उपस्थित भाग का नाम है, जो सब देशों में उरू के बल से जावे आवे प्रवेश करे वह वैश्य और जो पग के नीच अंग के सदृश मूर्खतादि गुण वाला हो वह शूद्र है।

''शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम। क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्चात्त थैव च॥ मनुः॥''

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वेश्य हो जाये। वैसे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के सदृश गुण वाला हो तो वह शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के कुल में उत्पन्न हुए शूद्र के सदृश्य हो तो शूद्र हो जाये। वैसे ही क्षत्रिय वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाते हैं। अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरूष व स्त्री हो वह-वह उसी वर्ण में गिने जावें।

धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तमवर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे कि जिस-जिस के योग्य होवे। वैसे अधर्माचरण से पूर्व-पूर्व अर्थात् उत्तम-उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे वाले वर्णों को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे। जैवे पुरूष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिये। इससे सिद्ध हुआ चारों वर्णों को अपने से उत्तम व नीचे वर्णों में अपने-अपने गुण कर्म स्वभाव युक्त होने से परिवर्तन होते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश)

नोट : मनु की कर्मणा वर्ण व्यवस्था का वर्तमान में पूर्ण रूप से विकृतीकरण हो गया है। आज हिन्दू समाज में विकृत जन्मना जाति-व्यवस्था प्रचलित है, जबकि धर्मशास्त्रों ने वेदानुकूल ग्रन्थों में कहीं पर भी समर्थन नहीं किया है फिर भी मनु के नाम से जोड़कर हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) की निन्दा करने का व्यापक राजनैतिक षड्यन्त्र चल रहा है।

नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाना होगा-प्रत्येक आर्य व आर्य समाजी विचार वाले व अन्य सुधारवादी सज्जनों को अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाना चाहिये। आर्य समाजी स्वयं जातिवाद के कटघरे में खड़ा है। हम दूसरों को क्या संदेश दे रहे हैं। महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर चल कर ही आर्य समाज उन्नति कर सकता है।

शास्त्रानुकूल शूद्र की परिभाषा-परिवारों में जो पढ़ाने से भी न पढ़े सुनने से भी न सुने आगे बढ़ने का प्रयत्न न करें, उसे शूद्र की संज्ञा दी जाती थी किन्तु भेदभाव वही था वर्तमान में शिक्षा युग चल रहा है, सभी परिवारों में युवा-युवती शिक्षित है अतः शूद्र अब अर्थात् (अनपढ़) अंगुलियों में गिनने लायक रह गये है। फिर शूद्र कहाँ है।

अज्ञान एवं अहंकार के कारण व्यवसायनुकूल नीच जाति व्यवस्था बनाई गई-जो-जो जिस व्यवस्था के कारण अर्थात् जैसे-लोहार, टम्टा मिस्त्री, दर्जी, (औजी) जो ढ़ोल बजाते है, व बुनकर आदि को अछूत व नीच जाति का समझा जाता है, परन्तु अब स्वर्ण जातियों ने उक्त व्यवसायों को अपना लिया है तो फिर अब जाति व्यवस्था में ऊँच-नीच छूआछूत क्यों है। उसे खत्म करना पड़ेगा, व्यवसायों में समानता आ गई है।

अवैदिक राजनीति के कारण जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है-भारत की राजनीति पूर्ण रूप से जातियों के नाम से वोट बैंक बना रही है कि यह एक जातिवाद कायम रहने का नासूर बन गया है। कालान्तर में यह कृत्य भयंकर विस्फोट करेगा। सारा भारत जातिवाद वर्गवाद में बंट गया है इसे समाप्त करना पड़ेगा। हमें स्मरण रखना चाहिये यह विज्ञान का युग है अर्थात् विज्ञान चरम सीमा तक पहुँच रहा है। फिर मानव जातियों में ऊँच-नीच छुआछूत क्यों हो रहा है। जब ईश्वर अपने सम्पूर्ण तत्वों को बिना भेदभाव के सब प्राणियों को देते हैं तो मनुष्य क्यों भेदभाव करता है क्या मनुष्य ईश्वर से भी बड़ा है।

भारत सरकार को आरक्षण की भीख देना समाप्त करनी चाहिये-भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त शोषित व अत्यन्त गरीब नागिरकों के लिए उस वक्त आरक्षण तो ठीक था, किन्तु आरक्षण को निरन्तर बनाये रखना ठीक नहीं है। अब वर्तमान में आरक्षण से लाभ के बजाय जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है और इसका लाभ समृद्ध परिवार अधिकांश उठा रहे हैं। अतएव आरक्षण कानून समाप्त होना चाहिये और भारत वर्ष में गरीब, अतिगरीब की श्रेणी बनाकर सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिये।

आर्यसमाज तथा अन्य सुधारवादी संगठनों से निवेदन-यह सर्वमान्य है कि आर्यसमाज सुधारवादी संगठन है और आध्यात्मिक, सामाजिक व राजनैतिक तीनों विधाओं में सुधार क्रान्ति वाला होने से सर्वोपरि संगठन है और जो अन्य संगठन समाज सुधार में सक्रिय है वह भी साधुवाद के पात्र है। समय आ गया है कि सभी मिलकर इस जातिवाद को भारत वर्ष में जड़ से समाप्त करने में आन्दोलित होवे। इस कथित जातिवाद से भारत ने बहुत हानि उठाई है और अब भी जातिवाद के कारण मानव जगत में शीत क्रान्ति चल रही है। यदि हमने जातिवाद को समाप्त कर दिया तो हम ईश्वरीय सिद्धान्तों के अति समीप पहुँच जायेंगे। अर्थात् ईश्वर की व्यवस्था में चलकर सुख व शान्ति पायेंगे। आर्य समाज संगठन को अब सुधारवादी कार्यों में आन्दोलित होना ही पड़ेगा।

जन्म के आधार पर जाति मानने से हानि ही हानि-जब से जाति का आधार जन्म से माना जाने लगा और शूद्र कुल या कथित छोटी जाति में जन्म लेने वाला छोटी जाति को माना जाने लगा, उसी समय से हमारा पतन होना प्रारम्भ हुआ। इसका दण्ड हमने कम नहीं भोगा है और भोग रहे है। सदियों की दासता सहनी पड़ी। विश्व गुरू भारत को किस-किस का गुलाम नहीं बनना पड़ा। भारतवासियों को एक होते हुए भी अनेकता में बंटना पड़ा ज्ञान विज्ञान के शिखर पर पहुँची यह मानव जाति अज्ञान के अन्धकार में भटकने को विवश हो रही है।

सम्पादकीय.....✍

मनुस्मृति की प्रतियां जलाना दुर्भाग्यपूर्ण

देश के सबसे प्रतिष्ठित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में मनुस्मृति की प्रतियां जलाने की घटना देश के लिए दुर्भाग्य की बात है। पहले ही देशविरोधी गतिविधियों के कारण इस विश्वविद्यालय का नाम धूमिल हुआ है। इन घटनाओं को देश का दुर्भाग्य कहें, बौद्धिक प्रदूषण कहें, मानसिक दासता कहें या एक सोची समझी साजिश समझा जाए। इस घटना की जितनी निन्दा की जाए उतनी कम है। इस सम्पूर्ण घटनाक्रम पर जे. एन. यू. प्रशासन का मूकदर्शक बने रहना और दोषी छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई न करना इस बात का संकेत है कि कहीं न कहीं उनकी भी इसमें मूक सहमति है। इस प्रकार की घटनाओं के घटित होने के बाद प्रशासन को चाहिए था कि तुरन्त दोषी छात्राओं के खिलाफ कार्रवाई करते और कड़ा संदेश देते कि एक विश्वविद्यालय के अन्दर इस प्रकार की राष्ट्रद्रोह की घटनाओं को माफ नहीं किया जाएगा। इस प्रकार की घटनाओं को अभिव्यक्ति की आजादी कहकर उचित नहीं ठहराया जा सकता है। यह एक बौद्धिक प्रदूषण है जो हमारी मानसिक दासता को दिखाता है। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी आज भी उसी गुलाम सोच को धारण कर रखा है। जब तक उस मानसिक दासता से मुक्ति नहीं मिलेगी तब तक यह बौद्धिक प्रदूषण आने वाली पीढ़ियों को भ्रमित करता रहेगा।

देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में मनुस्मृति की प्रतियां जलाना और उसके खिलाफ कोई कार्रवाई न होना इस बात को दर्शाता है कि अभी लोग मनुस्मृति और महर्षि मनु को पूरी तरह समझ नहीं पाए हैं। जिन बातों के आधार पर मनु का विरोध किया जाता है वे सभी बातें निराधार हैं। जिन लोगों ने मनुस्मृति को पढ़ा तक नहीं है वे भी मनु का विरोध करते हैं। जे.एन. यू. जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान में जिसे उच्च शिक्षा का केन्द्र समझा जाता है, उसी संस्थान में उच्च शिक्षित लोग मनुस्मृति को समझ नहीं पाए हैं तो साधारण लोगों के बारे में क्या कहा जा सकता है? किसी भी विश्वविद्यालय में अगर बौद्धिकता के नाम पर इस प्रकार का प्रदूषण छात्रों के दिमाग में भर दिया जाता है तो वह देश के लिए चिन्ताजनक है। यह प्रदूषण देश की युवा पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है। इन शिक्षण संस्थानों में अगर शिक्षा के स्तर को सुधारा न गया तो देश की आने वाली पीढ़ियां अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ विद्रोह कर बैठेंगी।

आजकल जे. एन. यू. में जो भी गतिविधियां हो रही हैं वे वास्तव में पूरे देश के लिए चिन्ताजनक हैं। पूरा देश स्तब्ध है कि किस प्रकार एक देशद्रोह के आरोपी का नायक की तरह स्वागत हो रहा है। उन्हें देश और मीडिया में बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया जा रहा है जैसे उन्होंने देश के लिए कोई कुर्बानी दी हो। ऐसे लोगों का समाज से बहिष्कार होना चाहिए जिनके कारण देश की एकता और अखण्ड़ता खतरे में हो। जमानत पर छूटकर ये आरोपी मीडिया के सामने आकर इस प्रकार के भाषण दे रहे हैं जैसे आजादी की लड़ाई लड़कर आए हों। कुछ स्वार्थी नेता और मीडिया के चाटुकार उन्हें गले लगाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हुए हैं।

मनु एवं मनुस्मृति का विरोध करने वालों में प्रमुखत: तीन प्रकार के व्यक्ति हैं। एक तो वे जिन्होंने मनु को पूवर्ग्राहग्रस्त अंग्रेजी आलोचनाओं और उस परम्परा के माध्यम से पढ़ा है और जो प्राचीन भारतीय साहित्य में कालक्रम से हुए परिवर्तनों प्रक्षेपों से परिचित नहीं हैं। दूसरे वे जिन्होंने मनुस्मृति के मौलिक और प्रक्षिप्त दोनों पक्षों को चिन्तन मननपूर्वक नहीं पढ़ा है। तीसरे वे जिन्होंने किन्हीं भान्तियों, पूर्वाग्रहों और निहित स्वार्थों के कारण मनु के विरोध को अपना लक्ष्य बना लिया है। किन्तु वास्तविकता यह है कि महर्षि मनु का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों निन्दा और विरोध करने के पात्र नहीं हैं। वे भारत और भारतीयता के लिए गर्व और गौरव के विषय हैं। महर्षि मनु ही पहले वह व्यक्ति हैं, जिन्होंने संसार को एक व्यवस्थित, नियमबद्ध, नैतिक एवं आदर्श मानवीय जीवन जीने की पद्धति सिखाई है। वे मानवों के आदि पुरूष हैं, आदि धर्मशास्त्रकार, आदि विधिप्रणेता, आदि विधिदाता, आदि समाज और राजनीति व्यवस्थापक व आदि राजर्षि हैं। मनु की प्रतिष्ठा, गरिमा और महिमा का प्रभाव एवं प्रसार विदेशों में भी भारत से कम नहीं है। ब्रिटेन, अमेरिका, जर्मन से प्रकाशित इन्साइक्लोपीडिया में मनु को मानवजाति का आदि पुरूष, आदि धर्मशास्त्रकार, आदि विधिप्रणेता, आदि न्यायशास्त्री और आदि समाजव्यवस्थापक वर्णित किया है। मनु के मन्तव्यों का समर्थन करते हुए अपनी पुस्तकों में मैक्समूलर, मैक्डानल, ए.बी.कीथ आदि पाश्चात्य लेखकों ने मनुस्मृति को धर्मशास्त्र के साथ-साथ लॉ बुक भी माना है और उसके विधानों को सार्वभौम, सार्वजनीन तथा सबके लिए कल्याणकारी बताया है। भारतीय सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन जज सर विलियम जोन्स ने तो भारतीय विवादों के निर्णय में मनुस्मृति की अपरिहार्यता को देखकर संस्कृत सीखी और मनुस्मृति को पढ़कर उसका सम्पादन भी किया। जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्से ने तो यहां तक कहा कि मनुस्मृति बाईबल से उत्तम ग्रन्थ है, बल्कि उससे बाईबल की तुलना करना ही पाप है।

आज कुछ पथभ्रष्ट और राजनीति का शिकार हुए लोग मनुस्मृति का विरोध कर रहे हैं, ऐसे लोगों को एक बार मनुस्मृति का अध्ययन करना चाहिए। एक ऐसे ग्रन्थ का विरोध कहां तक उचित है जिसकी प्रशंसा देश में ही नहीं विदेशों में भी गाई जाती है। अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए महर्षि मनु का विरोध करना उचित नहीं है। जे.एन. यू. में मनुस्मृति की प्रतियां जलाना तो और भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि इससे छात्रों की संकीर्ण बौद्धिक मानसिकता का अनुमान लगाया जा सकता है। जब तक वहां के शिक्षक अपनी संस्कृति, सभ्यता को मानने वाले नहीं होंगे तब तक छात्रों का सम्पूर्ण मानसिक विकास नहीं हो सकता। इसलिए कारण जो भी हो इस प्रकरण में दोषी पाए जाने वाले छात्रों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करनी चाहिए ताकि भविष्य में पुन: इस प्रकार की घटना न हो। अभिव्यक्ति के नाम पर देश की संस्कृति, एकता और अखण्ड़ता के साथ खिलवाड़ नहीं होना चाहिए।

-प्रेम भारद्वाज संपादक
एवं सभा महामन्त्री

आचमन मन्त्रों की स्थिति

-पं० वेदप्रकाश शास्त्री, 4 E, कैलाश नगर, फाजिल्का

1. महर्षि दयानन्द 'संस्कार विधि' में प्रार्थना मन्त्र, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण मन्त्रों के, पश्चात् आचमन करना लिखा है। अत: वहीं पर करना चाहिए। परन्तु **''आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्''** (मीमांसा शाबर भाष्य 1/3/5) के अनुसार अनेक विद्वानों द्वारा प्रार्थना मन्त्रों से पूर्व ही आचमन किया जाता है, जो औचित्यपूर्ण नहीं। महर्षि ने भी शतपथ आदि ब्राह्मण, आरण्यक, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र सदृश समस्त ग्रन्थ पढ़े थे। अत: उनके दृष्टिपथ में यह उक्ति न आई हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। परन्तु उन्होंने उन्हें अक्षरश: ग्रहण नहीं किया। स्थान चयन हेतु महर्षि ने प्राचीन पद्धति का अनुसरण किया है जो अग्न्याधान से पूर्व है। इसीलिए उन्होंने स्वयं पूर्व में न लिख कर पश्चात लिखा है। अत: हमें उसी के अनुसार चलना चाहिए। पाण्डित्य प्रदर्शन करना उचित नहीं।

2. ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना, स्वस्ति-वाचन, शान्तिकरण के मन्त्र संकलित नहीं थे। यह तो महर्षि का विनियोग है। वस्तुत: उस समय अग्न्याधान से पूर्व ही आचमन किया जाता था। महर्षि ने भी आचमन मन्त्रों को वहीं पर स्थान दिया है, जिससे सभी को स्वीकार करना चाहिए।

3. अभ्युपगम सिद्धान्त के आधार देखा जाये तो भी 'आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्' के अनुसार यज्ञकर्म मुख्यत: अग्न्याधान से ही प्रारम्भ होता है। अत: अग्न्याधान से पूर्व ही आचमन, अंगस्पर्श करना युक्ति-युक्त एवम् बुद्धिगम्य है, न कि ईश्वरस्तुति.... मन्त्रों से पूर्व।

4. ''ईश्वरस्तुति... से पूर्व आचमन'' के समर्थक विद्वानों के अनुसार तो महर्षि दयानन्द का अग्न्याधान से पूर्व आचमन, अंगस्पर्श का विधान करना त्रुटिपूर्ण है, यही सिद्ध होता है।'' अत: एतादृश विद्वानों का महर्षि में त्रुटि दिखाने का दृष्टिकोण ग्राह्य नहीं है।

5. महर्षि से पूर्व भी तो यज्ञ होते थे, वह भी महायज्ञ ! परन्तु उस समय ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्र समूह संकलित नहीं थे, तब आचमन कहां होता था ? ''आचन्तेन....''। का प्रमाण प्रस्तुत करने वाले विद्वान् इस सम्बन्ध में क्या कहना चाहेंगे ? और जब शाबर का भाष्य नहीं था, उस समय 'मीमांसा' में आचमन की क्या स्थिति थी ?

आचमन मन्त्रों अर्थात् ''ओम् अमृतो.....'' का विधान तैत्तरीय आरण्यक प्र. 10/अनु. 32,35 में किया गया है जो कि मीमांसा और शाबर से अधिक प्राचीन है फिर शाबर के प्रति ही इतनी अन्धश्रद्धा प्रकट करने में कोई औचित्य नहीं। कहीं एतादृश विद्वान् किसी पूर्वाग्रह से मुक्त तो नहीं हैं ?

6. श्री पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी ने ''वैदिक नित्य कर्म विधि'' (फरवरी 1980) पृष्ठ 14-15 पर सामान्य प्रकरण के मन्त्रों को तीन समूहों में विभाजित किया है-

एक-ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण दूसरा-अग्न्याधान से आधारावाज्य-भागाहुतिपर्यन्त। तीसरा-व्याहति आहुतियों से अन्त पर्यन्त।

दैनिक अग्निहोत्र में इन तीनों समूहों में से किसी समूह के मन्त्रों का सम्बन्ध नहीं है (देखें पृ. 60 पर भी)-ईश्वर-स्तुतिप्रार्थनोपासना के मन्त्र दैनिक अग्निहोत्र के अवयव नहीं है, क्योंकि प्राचीन ऋषियों के मतानुसार प्रत्येक गृहस्थ को आवसध्याग्नि की स्थापना करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द के अनुसार विवाहाग्नि को प्रकट करके.....। (संस्कार विधि, विवाह संस्कार पृ. 219)। इस स्थिति में अग्न्याधान की आवश्यकता नहीं रहती। अत: हमें अग्न्याधान करना पड़ता है।

यद्यपि अग्न्याधान से पूर्व ईश्वर स्तुति, स्वस्ति-वाचन, शान्तिकरण का दैनिक अग्निहोत्र से कोई सम्बन्ध नहीं, पुनरपि यदि समय हो तो सन्ध्योपासना के पश्चात् ईश्वर-स्तुतिप्रार्थनोपासना के मन्त्रों का पाठ एवं मनन उपयोगी है।''

इससे विदित होता है कि ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना के मन्त्रों को वैकल्पिक अथवा ऐच्छिक रूप में ही स्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष यही निकलता है कि प्राचीन पद्धत्यनुसार अग्न्याधान से पूर्व ही आचमन होना चाहिए, न कि हम उसे 'आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्' का प्रमाण देकर पूर्व, फिर और पूर्व खिसकाते चले जायं। भला यह कहां की बुद्धिमत्ता है ?

यह तो वही बात हुई-किसी स्थान पर एक आदमी भोजनार्थ आकर पंक्ति में पहले नम्बर पर बैठ गया। दूसरा व्यक्ति आया। उसने पहले व्यक्ति को आगे खिसकने के लिए कहा। तीसरे ने आकर उन दोनों को कहा। चौथे ने पहले से बैठे तीनों को कहा। इस प्रकार पहले नम्बर पर बैठा व्यक्ति धीरे-धीरे अन्त में पहुंच गया।

बस, यही स्थिति आचमन मन्त्रों की हुई। विद्वद्-वर्ग ने इन्हें ऐसा धक्का दिया कि वे अग्न्याधान से बहुत दूर निकल गए।

ईश्वर स्तुति के बाद स्वस्ति-वाचन बोलने पर आचमन और भी पूर्व में चला जाता है। शान्तिकरण के आने पर आचमन मन्त्रों को और भी आगे खिसकना पड़ता है। क्योंकि साप्ताहिक सत्संगों में कभी स्वस्तिवाचन और कभी शान्तिकरण मन्त्रों को अदल-बदल कर बारी-बारी से बोला जाता है। बृहद्यज्ञों में ईश्वर स्तुति-प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण तीनों का ही पाठ किया जाता है। अत: आचमन मन्त्रों की सिकुड़ती फैलती स्थिति चिन्तनीय है।

7. एक बात और, यदि आगे चलकर कोई अन्य ऋषि आ जाय और वह ''ईश्वर स्तुति.....'' आदि सहित इन्हीं के सदृश ''भद्रवाचन'' नाम देकर एक और मन्त्र समूह प्रस्तुत कर दे तो क्या ''आचान्त'' नियम के अनुसार आचमनमन्त्र और भी पूर्व में नहीं चले जायेंगे ?

अन्तत: इसका अन्त कहां होगा? क्या इसकी कोई अन्तिम सीमा भी निर्धारित है ? नहीं न ? फिर क्यों न महर्षि की विधि के अनुसार अग्न्याधान से पूर्व ही आचमन किया जाय, न कि ईश्वर स्तुति से पूर्व।

8. विद्वद्वर्ग का ध्यान मैं एक और हेतु की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ-

शतपथ ब्राह्मण के ''संस्काराध्याय'' में समिधाओं को संस्कृत करने का विधान है-

प्रोक्षणरध्वर्युरादत्ते। स इध्ममवाग्रे प्रोक्षति: ''कृष्णोऽ स्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि इति।'' तन्मेध्यमवैतदग्नये करोति॥ शतपथ 1/1/3/3, तुलना यजु. 2/1

अध्वर्यु प्रोक्षणी को लेता है। यह अध्यवर्यु 'कृष्णोऽ स्याखरेष्ठोऽग्नये....। इत्यादि मन्त्र बोलते हुए समिधाओं का अभिषिंचन करता है। इस प्रोक्षण कर्म द्वारा समिधाओं को यज्ञकर्म के अनुरूप संगमनीय पावन और पवित्र बनाया जाता है।

यहां ''कृष्णोऽस्याखरेष्ठ.....।'' इस मन्त्र से प्रोक्षण के लिए कहा गया है। यह मन्त्र यजु. 2/1 से शतपथ में उद्धृत किया गया है।

महर्षि दयानन्द ''संस्कार विधि'' के सामान्य प्रकरण में चरु अर्थात् होम के लिए पाक बनाने की विधि में लिखते हैं-

ओम् अग्नये त्वा जुष्टं निर्वपामि॥ आश्व. गृ. 1/10/6 अर्थात् जितनी आहुति देनी हो.....।

ओम् अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि॥ यजु. 1/13, 2/1 अच्छे प्रकार जल से धो के .....।

जिस प्रकार महर्षि ने चावल धोने के लिए यजु. 1/13, 2/1 मन्त्र का प्रयोग किया है, शतपथ ने उसी मन्त्र से समिधाओं पर जलसिंचन का विधान किया है। जैसे चावल साफ सुथरे चाहिए, वैसे ही समिधाएं भी तो चाहिए।

परन्तु यह विद्वद्वर्ग शतपथ के इस वचन को न मान कर क्या कन्नी नहीं काट गया ? उनकी लेखनी यहां पर क्यों कुण्ठित हो गयी ? शतपथ का यह वचन उनके ध्यान में क्यों नहीं आया ? अथवा जान बूझकर इसकी उपेक्षा कर दी?

अंत: उन विद्वानों के लिए भी यह एक बहुत बड़ी चुनौती है जिन्होंने आचमन मन्त्रों को महर्षि द्वारा निर्देशित स्थान से हटा कर

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पृष्ठ 4 का शेष-आचमन मन्त्रों.....

'ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना' से पूर्व ले जाने का उपक्रम किया। क्योंकि उनके सामने ''आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्'' (मीमांसा शाबर भाव्य 1/3/5) का प्रमाण सम्मुख था। वस्तुत: शतपथ ब्रह्मण की अपेक्षा मीमांसा ग्रन्थ अर्वाचीन है और भाष्यकर्त्ता शाबर मीमांसा से और भी परवर्ती।

सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने मीमांसा पर व्यासमुनिकृत व्याख्या को ही प्रामाणिक माना है, शाबर को नहीं।..... ''आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना ऐसा है कि एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियों का पाना।'' अत: शाबर का भाष्य आर्ष कहां तक है, इस पर अवश्य ही प्रश्न चिन्ह लग जाता है और आचान्त समर्थक विद्वानों पर भी।

एक बात और, यदि विद्वान् शाबर को प्रामाणिक मानते हैं तो समिधा अभिषिञ्चन हेतु उपर्युक्त उध्धरण को प्रामाणिक क्यों नहीं मानते ? समिधादान से पूर्व समिधाओं का अभिषिञ्चन हेतु उपर्युक्त उद्धरण को प्रामाणिक क्यों नहीं मानते ? समिधादान से पूर्व समिधाओं का अभिषिञ्चन भी प्रारम्भ कर दें क्योंकि शाबर के मीमांसा भाष्य से शतपथ ब्राह्मण अधिक प्रामाणिक और प्राचीनतम है। साथ ही यह तो साक्षात् यजुर्वेद 2/1 का वेदमन्त्र भी है। इससे अधिक प्रामाणिकता भला और क्या चाहिए ? क्या वेदों को प्रामाणिक नहीं मानते ? महर्षि ने-

ओम्अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि॥ यजु 2/1

मन्त्र का चावल धोने के लिए विनियोग किया है तो शतपथकार ने इसी वेदमन्त्र के एक अंश-

ओम् कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि॥ यजु. 2/1

का समिधा अभिषिञ्चन हेतु विनियोग किया है। दोनों के मन्त्रांश एक ही वेदमन्त्र यजु. 2/1 के हैं।

अत: समिधाओं के अभिषिञ्चन हेतु प्रमाण रूप में प्रयुक्त किए गए मन्त्र में भी दम है।

यदि नहीं तो ''आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्'' को भी अप्रमाणिक मान कर महर्षि की आचमन विधि हेतु निर्दिष्ट मन्त्रों को यथास्थान ही रहने देना चाहिए।

ऐसे कितने ही उद्धरण उद्धृत कर महर्षि की विधि में परिवर्तन किया जा सकता है, जो अनुचित है।

आशा है विद्वद्वर्ग मेरे विचारों से सहमत होगा।

महर्षि दयानन्द जयन्ति व महा शिवरात्री

आर्य समाज सिकन्दरपुरा बठिंडा (पंजाब) में दोनों कार्यक्रम बहुत ही भक्ति भाव से मनाये गये। इस वर्ष आर्य जगत में पूरा जोश व साहस दिखाई दिया।

जब कभी देश में कोई संकट आता था तो पूरे देश कि निगाहें आर्य समाज व आर्यों की ओर होती थी। आर्य जगत पूरा साथ देता था। जिस मेहनत व कुर्बानी से महर्षि दयानन्द जी ने आर्य जगत को बुलन्दियों तक पहुँचाना था। अब हमें भी कुछ संकल्पों द्वारा उनका कर्जा चुकाना चाहिये।

1. प्रत्येक आर्य समाज को अपने मेम्बरों में हवन कुण्ड नये बनवाकर व सामग्री दैनिक हवन यज्ञ के लिये घरों में पहुँचानी चाहिये।

2. शहर में दया धर्म के कार्य (जैसे गर्मी में ठण्डा पानी व दुखियों का सहारा बनना व धार्मिक कार्य व यज्ञों में समाज की ओर से हवन सामग्री भी पहुँचाना।

3. खून दान केम्प लगाना वेद प्रचार करना व प्रभात फेरियां निकालना। आज भी राजेन्द्र आर्य जी के पिता स्व. केवल राम जी की मिसाल कायम है। सौभाग्य से हवन यज्ञ में जाना होता था तो घी व समग्री अपनी घर से ले जाते थे। कृष्णा बाल जटाना जैसे कर्मठ आर्य आज भी हैं। जिन्होंने खण्डर स्थान को खुद पैसा लगाकर व दान माँग कर (आर्य समाज सिरकी बाज़ार रोड वाली गली बठिन्डा का रूप दिया। आर्य जगत में समाज को ऊंचाईयों तक पहुंचाना यज्ञशाला को सुन्दर पत्थर से संजोया। दूसरे खण्डर स्थान को पैसा लगाया, दान माँगा, मेहनत की। (आर्य समाज सिकन्दरपुरा बठिन्डा का नाम दिया) जिसके आज संचालक व कोषाध्यक्ष हैं। सुंदर टाइलों से यज्ञशाला सजाई, नये हवन कुण्ड व सामग्री सस्ते दामों पर देते हैं। मीठी वाणी से भजन भी बोलते हैं।

-अरुशा अग्रवाल प्रधान

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज नवांकोट में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषिबोधोत्सव (महाशिवरात्री पर्व) बड़ी श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ 9 मार्च से 13 मार्च तक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री बाबू सरदारी लाल आर्यरत्न, वरिष्ठ उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

9-3-2016, प्रात:, डा० प्रकाश चन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न किया गया। कुमारी शिवानी आर्य तथा स्त्री सभा के भजन हुए। पश्चात् आचार्य नारायण सिंह जी के प्रवचन हुए। सायं को पहला सत्संग श्री राम कुमार मादान जी के घर पर किया गया जिसमें कुमारी शिवानी तथा लक्षमण कुमार तिवारी के भजनों से लोगों को आनंदित किया। जनता पर आचार्य जी के प्रवचनों का अच्छा प्रभाव रहा।

10-3-16 को प्रात: डा० प्रकाश चन्द जी ने आर्य समाज में यज्ञ सम्पन्न करवाया। स्त्री सभा व हरविन्द्र कुमार के मनोहर भजनों ने लोगों पर अच्छा प्रभाव छोड़ा। आचार्य नारायण सिंह जी ने यज्ञ की महिमा पर प्रभावशाली प्रवचन दिया। सायं अशोक लाहौरिया जी के घर पर सत्संग किया गया जिसमें यज्ञ पं० बनारसी दास आर्य द्वारा सम्पन्न किया गया। निर्मल आर्य तथा शकुन्तला आर्य के भजनों को लोगों ने काफी सराहा। पश्चात् आचार्य जी ने गृहस्थ जीवन पर प्रभावशाली प्रवचन दिया।

11-3-16 को प्रात: डा० प्रकाश चन्द जी के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ सम्पन्न किया गया। कुमारी शिवानी तथा कीमती लाल जी के भजन हुए तथा आचार्य जी के प्रवचनों ने दयानन्द आर्य स्कूल के बच्चों पर अच्छा प्रभाव छोड़ा। सायं को राज कुमार योगाचार्य के निवास स्थान पर पं० बनारसी दास आर्य ने यज्ञ करवाया तथा कुमारी शिवानी आर्य और अशोक शर्मा, हरविन्द्र कुमार के भजनों ने समय बांध दिया। आचार्य जी के प्रवचन को भी लोगों ने बड़ा पसन्द किया।

12-3-16 को प्रात: डा० प्रकाश चन्द जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। स्त्री आर्य सभा तथा लक्षमण तिवारी जी के भजनों के पश्चात् आचार्य नारायण सिंह जी ने पर्वों के महत्व पर प्रभावशाली प्रवचन दिया। सायं का सत्संग श्री रविन्द्र कुमार आनन्द जी के निवास स्थान पर किया गया जिसमें पं० बनारसी दास आर्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा कुमारी शिवानी और हरविन्द्र कुमार के भजनों ने लोगों को आनंदित कर दिया। आचार्य जी ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना सुनाना, विषय पर प्रभावशाली प्रवचन दिया।

13-3-16 पूर्णाहुति का दिन था। पूज्यपाद पं० सत्यपाल पथिक जी का जन्मदिन 13-3-16 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पं० सत्यपाल पथिक जी ने स्वयं यज्ञ किया तथा सारे परिवार ने यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुतियां डालीं। पथिक जी के अच्छे स्वास्थ्य, व दीर्घ आयु के लिये सभी ने मिल कर प्रार्थना की। यज्ञ के पश्चात् स्त्री सभा ने भजन प्रस्तुत किये। कुमारी शिवानी आर्य तथा दिनेश पथिक जी के भजनों ने श्रोताओं का मन मोह लिया। माता जगदीशरानी के भजन के पश्चात् स्वामी मधुरानन्दा जी ने स्वामी जी के जीवन की घटनाओं का शानदार ढंग से उल्लेख किया। ब्रह्म स्वराज ग्रोवर ने स्त्रियों को जीवन में आगे बढ़ने व भ्रूण हत्या रोकने के लिये जागृत किया। आचार्य नारायण सिंह जी ने स्वामी दयानन्द जी के राष्ट्रप्रति संस्मरणों का बोध करवाया। पं० सत्यपाल पथिक जी को परिवार की ओर से अपने जन्मदिन पर जीवन की चित्रावली भेंट की गई तथा नवांकोट आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया गया। पथिक जी ने अपने वक्तव्य में स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन की कुछ घटनाओं का उल्लेख करके लोगों को वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

श्री बाबू सरदारीलाल आर्यरत्न, सभा अध्यक्ष ने अपने भाषण में लोगों को स्वाध्याय करने के लिये आर्य सभा से आधे मूल्य पर पुस्तकें खरीदने के लिये प्रोत्साहित किया। लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ने तथा बुराईयों के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिये प्रेरित किया। आर्य समाज एक विलक्षण संस्था है जिसमें झूठ, पाखण्ड, अन्धविश्वास तथा ठग्गी के लिये कोई स्थान नहीं। इसके पश्चात् आर्यसमाज नवांकोट के कर्मठ कार्यकर्ताओं को गायत्री मन्त्र भेंट करके सम्मानित किया गया। वेद भल्ला जी दिल्ली से, पं० सत्यपाल पथिक जी, स्वराज ग्रोवर, बाबू सरदारीलाल आर्य रत्न, माता जगदीशरानी, आचार्य नारायण सिंह जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में सर्व श्री-बाल किशन एडवोकेट, विजय आनन्द, राजकुमार योगाचार्य, विनोद मदान, अशोक लाहौरिया, लक्ष्मण कुमार तिवारी, कीमती लाल, गौरव कामता, सौरभ आर्य, भरत आर्य, धनी राम, हरजिन्द्र सिंह, हरविन्द्र कुमार, खुशी राम-सन्त राम सराफ, डा० रजेश शर्मा, निर्मल आर्य, सुदेश आर्य, शकुन्तला आर्य का विशेष योगदान रहा। शान्तिपाठ के पश्चात् ऋषिभोज अटूट चलता रहा।

-पं० बनारसीदास आर्य मन्त्री

वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर फील्ड गंज, लुधियाना का चुनाव सर्वसमति के साथ श्री रमेश कुमार सूद जी की अध्यक्षता में कराया गया। जिसमें निम्न पदाधिकारी नियुक्त किए गए।

श्री विनोद कुमार सूद (प्रधान), श्रीमति बाला गम्भीर (प्रचार मंत्री)
श्री प्रवीन सूद (उपप्रधान), श्रीमति शांति देवी (संशक्षिका)
श्री रमेश सूद (महामन्त्री),श्रीमति नीना तोखी (पुस्तकाल्य सेवा)
श्री सहर्ष कुमार सचदेवा (कोषाध्यक्ष)
श्री सुरेश गम्भीर (उपमन्त्री)
श्री वीरेन्द्र गम्भीर (सहायक कोषाध्यक्ष)

-रमेश कुमार सूद (महामन्त्री)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध दिवस मनाया

आर्य समाज मन्दिर सनौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस व बोध पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। मन्दिर को बिजली की रोशनी से सजाया गया। नैशनल थियेटर आर्टस सोसाइटी (नटास) द्वारा नाटक उत्सव आयोजित किया गया। मुख्य महमान गुरदीप कौर, मैनेजर स्टेट बैंक ऑफ पटियाला (सनौर शाखा); प्रधान राजेन्द्र वर्मा, खास आमन्त्रित मेहमान भरत गोयल एम. सी. सुनीता देवी एम. सी., डॉ. अनिल रूपराए ने गायत्री मन्त्रोचारण से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को श्रद्धाजंली भेंट कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री प्राण सभ्रबाल व सुनीता सभ्रबाल के निर्देशन में कलाकारों ने दहेज प्रथा: बाल विवाह तथा नशों के विरूद्ध नाटक सुक्की कुख: सुहाग, साइयां विनते बधाइयां किते; पतंगबाज पेश किए, जिन्हें लोगों (दर्शकों) ने बहुत पसंद किया। सभी कलाकारों को नकद पुरस्कार दिए गए तथा मेहमानों का संम्मान किया गया। इस अवसर पर नटास की ओर से रेडियों, टी.वी., फिल्म तथा स्टेज कलाकार प्रधान राजेन्द्र वर्मा को उनकी समाज सेवा, आर्य समाज तथा थियेटर के प्रति बहुमूल्य योगदान के लिए नटास दम्पती प्राज्ञा सभ्रवाल, सुनीता सभ्रवाल तथा प्रधानगी मंडल ने नटास का गौखमई "**शान-ए-पंजाब, जीवन पर्यन्त प्राप्ती अवार्ड ऑफ आनर**" से मोमैंटों, शाल, गुलदस्ते तथा उपहार देकर सम्मानित किया।

रविवार को प्रात: आर्य समाज परिसर में **इक्कीस (21) कुण्डीय शान्ति यज्ञ** का आयोजन किया गया। श्री ओंकार नाथ शास्त्री दीपक कुमार शास्त्री जी पुरोहित तथा श्री ब्रत पाल बदरू (चेयरमैन, सभा सनौर); प्रधान राजेन्द्र वर्मा, श्री/श्रीमती भरत गोयल एम. सी., सुनीता देवी व ब्रिज भूषण एम.सी.; श्रीमती एवं श्री चन्द्र मोहन कौशल प्रिंसीपल श्री राम आर्य सी. सै. स्कूल पटियाला, रीटा खन्ना, रवेन्द्र खन्ना खन्ना मैडिकल एजैंसीज पटियाला यजमान बने। दूर-दूर से आए लोगों ने यज्ञ में आहुतियां डालीं। यज्ञ उपरन्त यज्ञ शेष तथा फल बांटे गए। श्री ब्रतपाल बदरू तथा राजेन्द्र वर्मा प्रधान ने सर्वश्री सतीश बदरू, नरेश भाटीया, प्यारा लाल, सुशील कुमार महता डा. शंकर दास व महेन्द्र बदरू के साथ गायत्री मन्त्रोंचारण से ध्वजारोहन किया। इसके बाद भजन व प्रवचन हुए।

राजेन्द्र वर्मा प्रधान तथा सतीश बदरू मन्त्री जी ने आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया।

तेज़ बारिश तथा बिजली की आँख मिचोली को मात देते हुए, श्री सतीश बदरू, नरेश भाटीया, शंकर दास, प्यारा लाल, सुशील मेहता, रवेन्द्र खन्ना, महेन्द्र बदरू, राज कुमार बदरू, महेन्द्र तनेजा तथा मोहित तनेजा ने सख्त मेहनत से प्रोग्राम को सफल बनाया प्रोग्राम ऋषि भोज से सम्पन्न हुआ। जो देर शाम तक चलता रहा।

-राजेन्द्र वर्मा, आर्य समाज, सनौर

द्वि-दिवसीय नि:शुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर, हिसार (हरियाणा) सम्पन्न

प्रसिद्ध नगर हिसार में, दिनांक 6-7 मार्च 2016 को भव्य विशाल पण्डाल में 100 से अधिक हवन कुण्डों पर सपत्नीक यजमानों एवं अन्य यजमानों को पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, एम. कॉम. दर्शनाचार्य वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) द्वारा प्रशिक्षण देने के उपरान्त दिनांक 7 मार्च 2016 को सायं 6 बजे निर्विघ्न सफल सम्पन्न हुआ।

पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी ने इन दिनों के दौरान यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्व और रहस्यों की वैज्ञानिक विवेचना की। साथ में सपत्नीक यजमानों (शिवरिार्थियों) को यज्ञ मंत्रों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया। यज्ञ को लेकर विशेष शंकाओं का समाधान भी कराया गया। उन्होंने कहा यज्ञ से लोगों में कल्याण की भावना उत्पन्न होती है तथा उन्हें परोपकार कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने मानव परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति लोगों के कर्तव्य के पालन पर बल दिया। उन्होंने कहा वैदिक सभ्यता और संस्कृति ही भारत की संस्कृति है। वेद मार्ग पर चलने से ही विश्व में शान्ति हो सकती है। उन्होंने कहा जब से हमने स्वयं को ईश्वर एवं यज्ञ से अलग कर लिया है, तब से हम अशांत, दु:खी, परेशान, भयभीत..... आदि हैं। अन्तिम दिन उन्होंने सपत्नीक यजमानों से दक्षिणा रूप में प्रतिदिन यज्ञ करने के संकल्प-पत्र भी लिये। शिविरार्थियों ने बड़ी श्रद्धा व उत्साह से अपने संकल्प-पत्र आचार्य प्रवर को समर्पित किये। इस शिविर की धुरी पं० भरत लाल जी शास्त्री रहे। शिविर के संयोजक श्री बलवान सिंह जी आर्य रहे। कीर्ति को प्राप्त आर्ष गुरूकुल कुरूक्षेत्र के आचार्य श्री सत्यप्रकाश जी व 25 ब्रह्मचारियों द्वारा शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था की गई।

माननीय श्री दुष्यन्त जी चौटाला-सांसद हिसार, स्वामी राजदास जी, श्री अशोक जी गुट, श्री आनन्द राज जी श्री के. के. गुप्ता जी-मुख्य अभियन्ता, श्री जगदीश चन्द्र जी प्रिंसिपल, पं. रामजी लाल जी आर्य-पूर्व सांसद-राज्यसभा, श्री दलजीत सिंह जी बैनीवाल (डी. एस. पी.), श्री हरि सिंह जी सैनी, आदि मुख्य अतिथियों ने शिविर में पधारकर शिविर की शोभा को बढ़ाया तथा सभी ने न्यास के इस अद्भुत कार्य की भूरि-भूरि प्रंशसा की। और न्यास को हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन भी दिया।

शिविरार्थी के रूप में श्री विरेन्द्र बड़ाला और श्री राज सिंह मलिक ने भी अपने अनुभव में बतलाया कि इस प्रकार के अनुठे कार्यक्रम से घरों में यज्ञ की ज्योति जरूर जलेगी। कु. कविता लोहान ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि इस शिविर में आकर हमें जो कुछ सुनने और सीखने को मिला है पहले नहीं मिला था। इस शिविर में पूज्य आचार्य द्वारा अनेक घरों में यज्ञ की ज्योति जलाने की प्रेरणा मिली है। और राष्ट्रभक्ति के प्रति आचार्य प्रवर का उद्बोधन हृदय ग्राही रहा।

अन्त में शिविर समापन पर शिविर के आयोजक महात्मा वेदपाल आर्य-अध्यक्ष सर्वकल्याण धर्मार्थ (पंजी.) पानीपत एवं शिविर संयोजक श्री बलवान सिंह आर्य ने परमपिता परमात्मा का विशेष धन्यवाद करते हुए पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वर जी, मुख्य अतिथियों, शिविरार्थियों, कार्यक्रर्ताओं, दानी महानुभावों के प्रति साभार व धन्यवाद प्रकट करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

-कमलकांत आर्य संयोजक प्रचार समिति

महर्षि दयानंद के विचारों से क्रांतिकारियों व स्वतंत्रता सेनानियों ने प्रेरणा ली

महर्षि दयानंद सरस्वती ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर दी थी, जबकि कांग्रेस का जन्म इसके करीब दस वर्ष बाद में हुआ था। महर्षि कहते थे कि स्वराज्य चाहे जैसा भी हो, वह विदेशी राज से हमेशा अच्छा होता है। यह विचार आर्य समाज गौशाला रोड़ फगवाड़ा के प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ने हवन यज्ञ के पश्चात् आयोजित सभा में व्यक्त किए। उन्होंने स्वामी जी के जन्मदिवस व बोध दिवस शिवरात्री के उपलक्ष में स्वामी जी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों एवं क्रान्तिकारियों ने महर्षि के विचारों से गहरी प्रेरणा ली थी। लाला लाजपतराय, शहीद आज़म स. भगत सिंह का परिवार समेत बहुत से क्रांतिकारी आर्य समाजी रहे। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी भी स्वामी जी के समाज सुधारक एवं देश की स्वतंत्रता सम्बंधी विचारों से खासे प्रभावित रहे। उन्होंने कहा कि नारी शिक्षा, छूआछूत के उन्मूलन को लेकर आर्य समाज ने आन्दोलनकारी भूमिका निभाई तथा समाज में फैले अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों का आर्य समाज ने हमेशा विरोध किया है।

इस अवसर पर श्रीमती सरला चोपड़ा, उर्मिला सूद, सावित्री सरदाना, सुरेन्द्र चोपड़ा, नीलम चोपड़ा, धर्मवीर नारंग, सुशील कोहली, बलराज खोसला, आशु पुरी, रोहित प्रभाकर, संजीव सभ्रवाल, सुशील वर्मा, रमन नारंग एडवोकेट, रणजीत सोंधी, बलीरा गौतम, राजरानी, दिशा पलटा व डा. यश चोपड़ा आदि उपस्थित थे।

-डॉ. यश चोपड़ा, महासचिव

महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर समारोह

डी. ए. वी. माडल हाई स्कूल कपूरथला में दिनांक 4.3.16 को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का जन्म दिवस कमेटी मैम्बर, समूह स्टाफ तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति में मनाया गया। सबसे पहले सुबह हवन यज्ञ करवाया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए एवं भाषणों द्वारा उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। पूरे स्कूल को ओउम ध्वजों से और दीपमाला से सुसज्जित किया गया। आर्य समाज के सदस्यों द्वारा और मुख्यध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन के बारे में और उनके द्वारा राष्ट्र निर्माण के योगदान के बारे में बताया गया। इस अवसर पर प्रधान श्री कपूरचन्द गर्ग जी, उप प्रधान धर्मपाल उप्पल, मैनेजर सत्यदेव उप्पल सैक्रेटरी श्रीमती सीताढंड, यशवीर वालिया, बंसी लाल अरोड़ा जी के अलावा अध्यापक व छात्र उपस्थित थे।

ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज कपूरथला में 'ऋषि बोधोत्सव दिवस' पर समाज के प्रधान श्री कपूरचन्द जी गर्ग की अध्यक्षता में अति श्रद्धापूर्वक, उत्साह एवं हर्षोल्लास से एक समारोह का आयोजन किया गया। उत्सव में स्कूल के छात्र-छात्राओं ने समूह-गान, कविता-वाचन एवं भाषण द्वारा महर्षि दयानन्द जी का समाज में अभूतपूर्व योगदान एवं उनके जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार रखें। आर्य समाज के प्रधान जी ने भी अपने प्रेरणादायक वचनों द्वारा बच्चों को उद्‌बोधन किया। आर्य समाज की महामंत्री श्रीमती सीता ढंड ने वर्तमान परिस्थितियों में अपने उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्यों के प्रति सचेत करते हुए संगठित रूप से समाज के प्रति संकल्पित एवं समर्पित होकर कार्य करने का संदेश देते हुए कविता-पाठ किया। समारोह में आर्य समाज के अधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। विद्यालय की प्रिंसीपल ने सभी आर्य जनों का धन्यवाद किया। **-कपूर चन्द गर्ग**

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज, बरनाला में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव का आयोजन

4-3-2016 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में आर्य समाज के प्रवर्त्तक महामनीषी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव मनाया गया। हिन्दी प्रवक्ता मैडम डॉ० सुशील बाला एवं संस्कृत प्रवक्ता मैडम अंजना के नेतृत्व में महाविद्यालय के हिन्दी एवं संस्कृत विभाग ने संयुक्त रूप से इस कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें छात्राओं को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आधुनिक भारत-निर्माण में दिए गए योगदान से परिचित कराया गया। कार्यक्रम में विभिन्न छात्राओं द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया। बी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा कु. शिखा ने महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन-परिचय पर पत्र-वाचन किया। बी. ए. प्रथम वर्ष की ही कु. रजनी रानी ने स्वामी जी की जन्मभूमि के संदर्भ में गुजरात के महत्त्व को रेखांकित करते हुए देश और समाज को महर्षि के अतुल्य योगदान का स्मरण दिलाया। बी.ए. द्वितीय वर्ष की कु. अनवीर कौर ने अपने भाषण में स्वामी दयानन्द के सामाजिक सुधार के क्रान्तिकारी कार्यों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। बी.ए. तृतीय वर्ष की कु. गायत्री रानी ने भी स्वामी जी के सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में किए सुधारों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. सुशील बाला एवं मैडम अंजना ने स्वामी दयानन्द पर विचार प्रकट करने वाली छात्राओं की प्रशंसा की तथा अन्य छात्राओं को भी इस प्रकार के ज्ञानवर्द्धक व समाजोपयोगी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा नारी शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयत्नों पर भी प्रकाश डाला।

-डॉ. सुशील बाला, बरनाला

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव मनाया गया

आर्य समाज गांधी नगर-2 में संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस 4 मार्च, 2016 दिन शुक्रवार को बड़ी धूमधाम से मनाया गया और भवनों को दीपमाला से सुसज्जित किया गया। नया ओ३म ध्वज लगाया गया। हवन यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। उसमें श्री बूटी राम जी आर्य सपत्नी ने यज्ञ पद को सुशोभित किया। आर्य परिवारों व आर्य जनों ने हवन यज्ञ में बढ़-चढ़ कर आहुतियां डालीं। पं कृष्ण लाल और मन्त्री रविन्द्र कुमार ने मन्त्र पाठ करवाया। प्रधान अमरनाथ जी ने आशीर्वाद की वर्षा की। पं कृष्ण लाल ने ऋषि जी को भजन के माध्यम से याद किया। प्रधान अमर नाथ जी ने वेदों की महिमा और ऋषि दयानन्द जी द्वारा दिखाए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया अन्त में सभी उपस्थित आर्य जनों ने मिलकर शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **-रविन्द्र कुमार**

ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आज दिनांक 6 मार्च, 2016 दिन रविवार को आर्य समाज खरड़ द्वारा आर्य कन्या विद्यालय के सहयोग से ऋषि बोधोत्सव आर्य स्कूल के प्रांगण में बड़े हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। इक्कीस कुन्डीय हवन यज्ञ आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक की विजयपाल जी शास्त्री जी के ब्रह्मत्व सम्पन्न हुआ। श्री यज्ञ दत्त जी जिज्ञासु व श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक जी के प्रवचन हुए। अतिथियों में श्रीमती अन्जु चन्द्रा प्रधान नगर पालिका खरड़ हलका इन्चारज अकाली दल के उजागर सिंह बडाली, बाईस चैयरमैन आई. टी. खुशवंत राय गीगा, लखविन्दर कौर गरचा, नरेन्द्र राणा, तारा चन्द जी चेयरमैन, जगदीश वर्मा, मैनेजर आर्य कन्या विद्यालय एवं की गीता राम प्रधान नरेश सिंगल कोषाध्यक्ष विष्णु मित्तल, विजय अंगुराल, विश्वबन्दु गुप्ता, एम. पी. अरोड़ा विकास सिंगला, महेश गर्ग, विद्यालय की प्रिंसीपल स्टाफ एवं बच्चों ने उत्सव के सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया मन्च संचालन प्रो. सत्य नरेश जी ने बखूबी निभाया। कार्यक्रम का समापन शान्तीपाठ एवं ऋषि लंगर के साथ सम्पन्न हुआ। **-गीता राम, आर्य समाज, खरड़**

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य यजमान श्री विजय चावला जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तृप्ता चावला से पं. शिवा शास्त्री ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न करवाया। इसके बाद आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री अरुण वेदालंकार ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाए जिससे आई हुई आर्य जनता को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसके पश्चात आर्य समाज के महामंत्री श्री रणजीत आर्य ने ऋषि बोधोत्सव पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि 14 वर्ष की आयु में बालक मूलशंकर के मन में शिवरात्रि के जागरण के समय यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि भगवान का असली रूप क्या है? उन्होंने बताया कि जिज्ञासा ही वस्तुत: ज्ञान का बीज है। मूलशंकर के हृदय में उत्पन्न होकर उस एक जिज्ञासा ने अन्य अनेक प्रश्न उत्पन्न कर दिये। बालक मूलशंकर यह सोचने लगा कि मैं कौन हूं, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है और मैं अपने जीवन को कैसे सार्थक बना सकता हूं। इन प्रश्नों ने मूलशंकर के अंदर ऐसी विचार क्रान्ति उत्पन्न कर दी जिसने उसे घर छोड़ कर सत्य की खोज करने को विवश कर दिया। लगभग 20 वर्षों की इसी ज्ञान यात्रा में उन्होंने सन्यास ग्रहण करके दयानन्द सरस्वती का नाम धारण किया। उन्होंने बताया कि आज हम ऋषि दयानन्द के ऋणी हैं जिसने स्त्री शिक्षा और वैदिक शिक्षा के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। इसके पश्चात मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा ने आई हुई जनता को सम्बोधित किया। उन्होंने आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर की प्रशंसा करते हुये कहा कि जिस तरह यह आर्य समाज कार्य कर रही है उससे मुझे ऋषि दयानन्द का सपना साकार होता दिखाई दे रहा है। जिस तरह हर रविवार को आर्य समाज में एक नये परिवार को यजमान बनाया जा रहा है वह कार्य बहुत ही सराहनीय है।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव पर विशेष अतिथि के रूप में पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी को सम्मानित करते हुये रणजीत आर्य, ईश्वर चन्द्र रामपाल चौ. हरी चन्द, रणजीत खन्ना व अन्य।

इस अवसर पर रमेश मुटरेजा, नवीन चावला, अदिति चावला, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, रणजीत खन्ना, ईश्वर चन्द्र रामपाल, कुबेर शर्मा, नन्दनी शर्मा, सुभाष आर्य, इन्दु आर्या, अनु आर्या, दिव्या आर्या, सान्या आर्या, सृष्टि आर्या, धर्मवीर आर्य, निर्मला आर्या, सुदर्शन आर्य, गौरव आर्य, विनोद कुमार तिवारी, संगीता तिवारी, स्वर्ण शर्मा, विजय लक्ष्मी शर्मा, वरुण शर्मा, पायल शर्मा, नियम शर्मा, रेणु, पायल, पूजा, अनु भास्कर, रानी, तिलक राज, राजीव कुन्दरा, चौधरी हरीचंद, सुशान्त कोहली, राजेन्द्र कुमार, राजीव शर्मा, लवलीन कुमार, बलराज मिश्रा, सुनील मल्होत्रा, संगीता मल्होत्रा, चन्द्रमोहन धीर, मोहित धीर, रंजनी, सुरिन्द्रा कुमारी, भूषण लाल, कुन्दन शर्मा, सुनीता शर्मा, मनु आर्या, प्रियंका, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा, एवं सभी धर्म प्रेमियों का पधारने पर धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के पश्चात ऋषि लंगर का विशेष कार्यक्रम किया गया।

-रणजीत आर्य

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।